IJIRSET
International Journal of Innovative Research in
SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2347-6710

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 11, Issue 6, June 2022

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 8.118

9940 572 462
6381 907 438
ijirset@gmail.com
www.ijirset.com

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 6, June 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1106333|

युग चेतना के विभिन्न पक्ष

Dr. Pooja Verma

Dept. of Hindi, KSBD PG College, Kanpur, India

सार

चेतना मन की एक स्थिति ही है - जिसके अन्तर्गत बाह्य जगत के प्रति संवेदनशीलता तीव्र अनुभूति का आवेग, चयन या निर्माण की शक्ति इन सबके प्रति चिन्तन विद्यमान रहता है ये सब बातें मिलकर किसी भी व्यक्ति की पूर्ण चैतन्य अवस्था का निर्माण करती है। चेतना समझने की वस्तु है उसे परिभाषित करना सरल नहीं है। व्यक्ति चेतना कारण ही क्रियाशील रहता है। चेतना रूप अत्यन्त सूक्ष्म और जटिल है। इसकी व्याख्या नियंत्रित शब्दों में नहीं की जा सकती है। फिर भी विचारकों ने अपने-अपने दृष्टिकोण से चेतना की व्याख्या करने का प्रयास किया है। 'चेतना' शब्द 'चित' से सम्बन्धित है। संस्कृत आचार्यों ने चेतना को बुद्धि-ज्ञान, जीवन-शक्ति, भावना या विचार के अर्थ में ग्रहण किया है। घी:, मति, चित, सवित्त, प्रतिपत, ज्ञाप्ति, सत्व एवं जीवंत के अर्थ में भी चेतना शब्द का प्रयोग किया जाता है। 'चैतन्य लक्षणा जीव:' अथार्त् जीवन का लक्षण ही चेतना है। **चेतना के स्वरूप को समझने के लिए हमें चेतना की परिभाषा जाननी होगी। समाज शास्त्रियों ने , दार्शनिकों ने और वैज्ञानिकों के चेतना शब्द का प्रयोग विभिन्न सन्दर्भों में किया है।** ' चेतना ' शब्द बुद्धि ज्ञान , मनोवृत्ति , स्मृति , सुधि , संज्ञा होश आदि अर्थों में प्रयुक्त होता है। अंग्रेजी में चेतना शब्द का समानार्थी शब्द " कांसशैनस " है जो मस्तिष्क की जागृत अवस्था , किसी वस्तु के विषय में ज्ञान , जानकारी अथवा विचार को घोषित करता है। सर विलियम हेमिल्टन ने चेतना को अपरिभाषित बताते हुए कहा हैः - " चेतना की परिभाषा नहीं की जा सकती। हम केवल यह अनुभव कर सकते हैं कि चेतना क्या है लेकिन हम चेतना को जो समझते हैं जैसा अनुभव करते हैं बिना किसी उलझन के दूसरों को नहीं बता सकते। " हिन्दी विश्व कोष के अनुसार चेतना " जीवधारियों में रहने वाला वह तत्व है जो उन्हें निर्जीव पदार्थों से भिन्न बनाता है। दूसरे शब्दों में हम उसे मनुष्य को जीवन क्रियाओं को चलाने वाला तत्व कह सकते हैं। चेतना स्वयं को और अपने आस पास के वातावरण को समझने तथा उसकी बातों का मूल्यांकन करने की शक्ति का नाम है " । ' हिन्दी साहित्य कोष ' के प्रधान संपादक धीरेन्द्र वर्मा ने चेतना के विषय में लिखा है कि " चेतन मानस की प्रमुख विशेषता चेतना है , अर्थात वस्तुओं , विषयों व्यवहारों का ज्ञान। "

मानक हिन्दी कोष के लेखक रामचन्द्र वर्मा के अनुसार चेतना मन की वह वृत्ति या शक्ति है जिससे जीव या प्राणी को आन्तरिक अनुभूतियों भावों विचारों और ब्राह्म घटनाओं तत्वों या बातों का अनुभव या भाव होता है।

डॉ . रमेश कुन्तल मेघ के अनुसारः - चेतना में नाना भांति की मानसिक क्रियाएँ शामिल है जैसे संवेदना , प्रत्यक्षीकरण , अवधारणा , चिन्तन अनुभूति और संकल्प। इस तरह यह मन बुद्धि अहंकार का संश्लेष है। इसे ' चिति ' भी कह सकते हैं। चेतन एक चिंतनात्मक अभिवृति का द्योतक है जो व्यक्ति को स्वयं के प्रति तथा विभिन्न कोटि की स्पष्टता तथा जटिलता वाले पर्यायवरण के प्रति जागरूक करता है। "

वैज्ञानिक तथ्यों ने भी पुष्ट कर दिया है कि चेतना मानव मस्तिष्क का वह गुण धर्म है , जिसके द्वारा हमें अपने आस पास की घटनाओं का बोध प्राप्त होता है और हम विश्व को जान पाते हैं। अतः चेतना के लिए न केवल मस्तिष्क अपितु पदार्थ अथवा वस्तुओं का होना भी आवश्यक है जो मस्तिष्क पर प्रभाव डालते हैं। "8 विभिन्न विद्वानों के चेतना विषयक विचार प्रस्तुत करने के पश्चात संक्षेप में कहा जा सकता है कि चेतना मानव में एक ऐसी प्रक्रिया शक्ति है जिसके बिना मनुष्य कोई काम नहीं कर सकता। यह मनुष्य की वह विशेषता है जो उसे जीवित रखती है और जो उसे अपने विषय में , अपने वातावरण के विषय में ज्ञान कराती हैं। उसी ज्ञान को विचार शक्ति कहा जा सकता है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि चेतना मानव में उपस्थित वह तत्व है जिसके कारण उसे सभी प्रकार की अनुभूतियां होती है। चेतना से प्रेरित होकर ही मानव देखता , सुनता , समझता और अनेक विषयों पर चिंतन करता है।

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 6, June 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1106333|

परिचय

चेतना और मनुष्य का मौलिक संबंध है। चेतना वह विशेष गुण है जो मनुष्य को सजीव बनाती है आरै चरित्र उसका वह संपूर्ण संगठन है। किसी मनुष्य की चेतना और चरित्र केवल उसी की व्यक्तिगत संपति नहीं होते। ये बहुत दिनों के सामाजिक प्रक्रम के परिणाम होते हैं। प्रत्येक मनुष्य स्वयं के वंषानुक्रम प्रस्तुत करता है। वह विशेष प्रकार के संस्कार पैतृक सम्पत्ति के रूप में पाता है। वह इतिहास को भी स्वयं में निरूपित करता है क्योंकि उसने विभिन्न प्रकार की शिक्षा तथा प्रशिक्षण को जीवन में पाया है। समाज व्यक्तियों अथवा परिवारों का एक ऐसा संगठन है जिसमें स्वहित की कामना से तथा समान उददेश्यों एवं आदर्शों की प्राप्ति के लिए व्यक्ति अथवा परिवार स्वेच्छापूर्वक सहयोग देते है।1

चेतना का कोषगत अर्थ है - चैतन्य, ज्ञान, होष, याद, बुद्धिगत, जीवन शक्ति आदि।

रामचन्द्र वर्मा अपने मानक हिंदी कोष में चेतना के विषय में लिखते हैं - चेतना जीव या प्राणी के अन्तर्बाह्य तत्वों या बातों का अनुभव या मान करती है।

उपरोक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि चेतना के बिना मनुष्य जीवित नहीं बल्कि मृत के समान है। चेतना से ही हमारा जीवन गति व विकास करने की शक्ति लेता है। चेतना जागरूकता लाने और संकल्प लेने में अहम् भूमिका निभाती है जिससे कार्य सम्पन्न हाते हैं। 2

'चेतना' शब्द का प्रयोग प्राय: मनोवैज्ञानिक तथा दार्शनिक अर्थों मे ही किया जाता है। चेतना मानव की प्रमुख विषेशता है जिसे वस्तुओं, विशयों, व्यवहारो का ज्ञान भी कहा जा सकता है। मनोवैज्ञानिक अर्थ मे - 'चेतना सभी प्रकार के अनुभवों का संग्रहालय है।' इस प्रकार से कह सकते हैं कि चेतना व्यक्ति की वह केन्द्रीय शक्ति है जो अनुभूित, विचार, चिन्तन, संकल्प, कल्पना आदि क्रियाएँ करती है।3

इसके अतिरिक्त वह दूसरे लोगों को भी अपने द्वारा निरूपित करता है, क्योंकि उसका प्रभाव उसके जीवन पर उनके उदाहरण, उपदेश तथा अवपीड़न के द्वारा पड़ा है।

एक बार मनुष्य की चेतना विकसित हो जाती है, तब उसकी प्राकृतिक स्वतन्त्रत चली जाती है। वह ऐसी अवस्था में विभिन्न प्रेरणाओं और भीतरी प्रवृतियो से प्रेरित होता, परन्तु वह उन्हें स्वतन्त्रत से प्रकाशित नहीं कर सकता। इस प्रकार मनुष्य की चेतना अथवा विवेकी मन उसके अवचेतन अथवा प्राकृतिक मन पर अपना नियंत्रण रखता है। मनुष्य और पशु में यही विशेष भेद है। मनुष्य की चेतना जागतृ होती है परन्तु पशु की नहीं।

यह एक समाज शास्त्रीय तथ्य है कि व्यक्ति समाज की ईकाई है। सामाजिक प्राणी होने के नाते वह समाज में रहकर ही अपनी वास्तविक प्रकृति का विकास करता है। वह सामाजिक क्रियाओं के द्वारा अपने को अभिव्यक्त करता है और उसकी चेतना की संरचना भी सामाजिक सम्बन्धों पर निर्भर करती है। सामाजिक सम्बन्धों के माध्यम से वह अपनी चेतना को अभिव्यक्त करता है। राईट के अनुसार " मनुष्य के समूह को समाज नहीं कहा जा सकता , अपितु समूह के अन्तर्गत व्यक्तियों के सम्बन्धों की व्याख्या का नाम समाज है। "8

मेकाईवर के अनुसार " मनुष्यों में जो चलन है , जो कार्यविधियां है , पारस्परिक सहायता की जो प्रवृति है शासन की जो भावना है , मानव व्यवहार के सम्बन्ध में जो स्वतन्त्राऐं व मर्यादायें हैं उनकी व्यवस्था को ही समाज कहते हैं। "9

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि समाज के लिए ये जरूरी है कि अनेक व्यक्ति एक साथ इकटठे रहते हैं और उनमें कुछ ऐसे स्थायी सम्बन्ध हैं कि जो उन्हें एक ईकाई का रूप प्रदान करते हैं तथा ये सम्बन्ध उनकी इच्छा से स्थापित किये गए हैं।4

चेतना का समाज से सम्बन्ध बताते हुए हिन्दी विश्वकोषकार ने लिखा है किः - " चेतना सामाजिक वातावरण के सम्पर्क से विकसित होती है। वातावरण के प्रभाव से मनुष्य नैतिकता , औचित्य और व्यवहारकुशलता प्राप्त करता है। यह चेतना का विकास कहा जाता है। विकास की चरम सीमा पर चेतना निज स्वतन्त्रता की अनुभूति करती है , वह सामाजिक बातों को प्रभावित कर सकती है और उनसे प्रभावित होती है , परन्तु इस प्रभाव से अपने आपको अलग भी कर सकती है। '6

विचार-विमर्श

चेतना का हमारी जीवन-शैली में बहुत महत्व है। मनोविज्ञान की दृष्टि में चेतना मानव में उपस्थित वह तत्त्व है जिसके कारण उस ेसभी प्रकार की अनुभूतियाँ होती हैं। चेतना के कारण ही हम देखते, सुनते, समझते और अनेक विशयों पर चिंतन करते हैं। इसी के कारण हमें सुख-दु:ख की अनुभूति हातेी है। मानव चेतना की तीन विशेषताएँ हैं। वह ज्ञानात्मक, भावात्मक और क्रियात्मक हातेी

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 6, June 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1106333|

है। चेतना ही सभी पदार्थों की जड़-चतेन, शरीर-मन, निर्जीव-सजीव, मस्तिष्क-स्नायु आदि को बनाती है। उनका रूप निरूपित करती है।

चेतना के विषय में हम स्पष्ट रूप से कह सकते हैं कि मनुष्य के मस्तिष्क में हाने वाली क्रियाओं अर्थात् कुछ नाड़ियों के स्पंदन का परिणाम ही चेतना है। यह अपने में स्वतन्त्र काई अन्य तत्व नहीं है। शरीर चेतना के कार्य करने का यंत्र मात्र है, जिसे वह कभी उपयोग में लाती है और कभी नहीं लाती है। परन्तु यदि यंत्र बिगड़ जाए या टूट जाए तो चेतना अपने कामों के लिए अपंग हो जाती है। चेतना के बिना सुना व देखा नहीं जा सकता है। 7

यह हमें अनुभव और भावनाओं की पहचान करने की अनुमति देता है। यही चेतना सही है जोकि भौतिक नहीं है लेकिन कुछ आध्यात्मिक है। इस प्रकार चेतना मानसिक अनुभूति है। मानसिक गतिविधि और सोच के साथ भावना भ्रमित मत करो, दानों वास्तव में भावना की प्रतिक्रिया नहीं है। सकारात्मक और नकारात्मक भावनाओं का स्तर है।

सकारात्मक क्रियाएँ जैसे - प्यार, क्षमा, दया-भाव व नकारात्मक क्रियाएँ जैसे - अज्ञान, स्वार्थ, घृणा आदि है। ये सब चेतना के तत्व नहीं हैं। इस प्रकार चेतना मानसिक होकर भी सामाजिक आरै सांस्कृतिक बनती जाती है।इस अर्थों के आधार पर सामाजिक चेतना की निम्नलिखित परिभाषा की जा सकती हैः -

“ पशुओं से भिन्न अर्थात जनसमूह अथवा जनसमाज की ज्ञानात्मिकता मनोवृति का नाम सामाजिक चेतना है। ” डॉ . रत्नाकर पाण्डेय के अनुसारः - “ सामाजिक चेतना अभावात्मक या नकारात्मक नहीं होती। यह प्रत्येक व्यक्ति में विद्यमान रहती है , परन्तु रूढ़ि , अशिक्षा , अभावों के कारण दुष्प्रभावित व कुण्ठित हो जाती है। इस दुष्प्रभाव से मुक्त रहना और कुण्ठा को अपनी अन्ततृप्ति से तिरोहित करना ही सामाजिक चेतना है। ”11

माक्र्स तथा एंगिल्स के अनुसार “ आर्थिक व्यवस्था ही वह मूलभूत आधार है जिस पर राजनैतिक तथा सांस्कृतिक चेतना निर्भर करती है , तथा उसी के अनुरुप सामाजिक चेतना के विविध रूप निर्मित होते हैं। तात्पर्य यह है कि मनुष्यों की चेतना उनके अस्तित्व का निर्धारण नहीं करती , इसके विपरीत उनका सामाजिक अस्तित्व उनकी चेतना को निर्धारित करता है। ” डॉ . सारस्वत के अनुसारः - “ सामाजिक चेतना मानवीय संज्ञान का वह रूप है जो लौकिक स्तर पर हमारे विवेक को समाज के विविध पक्षों से जोड़ता है और अलौकिक स्तर पर चित्ति के रूप में अभिज्ञात होकर वैश्विक संविद या आत्म चैतन्य के रूप में विवेचित होता है। शास्त्रीय शब्दावली में चेतना जहाँ चित्ति अथा संविद् में परिगृहीत है वहाँ सामान्य शब्दावली में वह विवेक के विभिन्न स्तरों पर कार्य अकार्य का बोध कराने वाली शक्ति भी है। ”12

इन सब परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि आर्थिक , सामाजिक , सांस्कृतिक राजनैतिक , धार्मिक , राष्ट्रीय तथा समाज में प्रचलित परम्परागत मूल्यों के परस्पर संवाद से जो नया बोध जाग्रह होता है उसकी समझ और विश्लेषणात्मक शक्ति का नाम सामाजिक चेतना है।

सामाजिक चेतना केवल समझ ही नहीं देती बल्कि वह सामाजिक उद्देश्यों को पूरा करने के लिए आगे बढ़ने की प्रेरणा भी देती है। हमारे कुण्ठा से ग्रस्त , जीवन में आशा रोशनी व विश्वास जागृत कर उन्हें एक सूत्र में पिरोना सामाजिक चेतना का कार्य है।

संक्षेप में सामाजिक चेतना न केवल अर्थव्यवस्था पर निर्भर करती है अपितु विकसित होते हुए समाज में आर्थिक ढांचे को भी प्रभावित करती है। वस्तुतः सामाजिक चेतना अत्यंत जटिल है। और उसे केवल अर्थव्यवस्था का ही पर्याय नहीं माना जा सकता। व्यक्ति की सामाजिक चेतना विकासशील है तथा प्रत्येक युग के साथ बदलती रहती है।

परिणाम

आधुनिक युग विमर्शों का युग है। इस काल में शिक्षा और विज्ञान की प्रगति ने लोकतांत्रिक मूल्यों को मजबूत किया है। फलस्वरूप साहित्य में स्त्री-विमर्श, दलित-विमर्श, किसान-विमर्श, आदिवासी-विमर्श पर पिछले कुछ दशकों में बहुत कुछ लिखा गया। दलित साहित्य की यात्रा सहानुभूति से स्वानुभूति की जमीन पर पहुंची। दलित साहित्य ने सदियों के मौन को स्वर देने का महत्वपूर्ण कार्य किया।भारत सहित दुनिया के अलग-अलग क्षेत्रों में दलित साहित्य ने अपनी नई पैठ जमाई। दलित साहित्य में कई प्रश्नों को सिर्फ उठाया ही नहीं गया, बल्कि समाधान की भी पुरजोर कोशिश की गई। आज भी दलितों को समान अधिकार दिलाने की लड़ाई जारी है। हालांकि आज भी उन्हें उनकी जाति के कारण अपमानित और मानसिक रूप से प्रताड़ित किया जाता है।भूमंडलीकरण ने दलितों के जीवन में कई बदलाव लाए हैं। उनके भीतर आज अपनी जाति को लेकर हीनता नहीं दिखती, बल्कि एक आत्मविश्वास दिखता है। पहले वे अपनी जाति से भिन्न लोगों के समक्ष खुल नहीं पाते थे, लेकिन 21वीं सदी में उन्होंने अपनी अस्मिता को पहचानते हुए अपने अधिकारों के लिए खुलकर बोलना शुरू कर दिया है।एक साक्षात्कार के दौरान मुझे यह पता चला कि दिल्ली सहित कई बड़े शहरों में

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 6, June 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1106333|

किसी सोसाइटी का मेंबर बनने के लिए जाति का बहुत महत्व होता है। उन्हें ही मेंबर या किसी पद पर आसीन किया जाता है जो सवर्ण जाति के होते हैं। वर्तमान परिदृश्य में ऐसी घटनाएं भी घट रही हैं। इन दिनों दलित साहित्य में कहानियां, कविताएं, नाटक, उपन्यास, संस्मरण आदि लिखे जा रहे हैं। कई आत्मकथाओं के माध्यम से दलित लेखकों ने खुद के ऊपर हुए जुल्म पर कलम चलाई है। उन्होंने अपनी पीड़ा को शब्दों के माध्यम से पूरी दुनिया तक पहुंचाया है और अपनी स्थितियों से अवगत करवाया है। ज्योतिबा फुले और अंबेडकर ने जिस दलित आंदोलन की आग को सुलगाया था वह अब भी जल रही है। उस आग की चिंगारी को दलित साहित्यकारों ने बहुत ही संभाल कर रखा है और उसी की प्रेरणा से वे लगातार अपने विरोध को जाहिर करते रहते हैं। दलित लेखकों की एक नई पीढ़ी आ चुकी है और इसी तरह अब नई चुनौतियां भी सामने हैं जिन पर विचार करना है।

समय के साथ परिस्थितियां बदलती हैं, ठीक वैसे ही नई समस्याएं भी पैदा होती हैं। आज कई नई समस्याएं मौजूद हैं जिन पर गंभीरता से विचार करना आवश्यक है। जरूरत है कि दलित जातियों को उनका अधिकार, सम्मान और सारी सुविधाएं मिलें जिनसे अब तक उनको वंचित रखा गया है। इसके लिए नए-नए मुद्दों पर विचार करने की जरूरत है, कहीं सीमित हो जाने की जगह।इस बार 'वागर्थ' में हम परिचर्चा के साथ कुछ साक्षात्कार भी दे रहे हैं ताकि दलित दृष्टिकोण की विविधता और विस्तार को उभारा जा सके।

समाज के विभिन्न संदर्भों में व्यक्ति परिवार तथा उसके विभिन्न उच्च , मध्य , निम्न आदि वर्ग तथा सामाजिक राजनीतिक , आर्थिक , एवं अन्य सांस्कृतिक बोध का स्वरूप विवेचित किया जाता है। विभिन्न संदर्भों में विवेचित होने पर ही यह बोध विभिन्न वर्गीय चेतना कहलाता है। अतः इस चेतना के अन्तर्गत यह बोध सामाजिक , राजनीतिक , आर्थिक एवं सांस्कृतिक हो जाएंगे।

1. **सामाजिक चेतनाः -** सामाजिक चेतना के क्षेत्र में हम समाज के अन्तर्गत मुख्यतः व्यक्ति (स्त्री - पुरुष) , परिवार तथा समाज के विभिन्न उच्च , मध्य एवं निम्न वर्गों तक ही परिसीमित नहीं। " यहीं हम उस समय के समाज विशेषकर हिन्दू एवं मुस्लिम समाज को चित्रित करेंगे। इसके साथ ही हम उस समाज में रहने वाले विभिन्न वर्गों को जो उच्च वर्ग , मध्य वर्ग , निम्न वर्ग को भी चित्रित करेंगे। इन वर्गों में आपस में कैसे संबंध थे यह भी देखेंगे। व्यक्ति चेतना के अंतर्गत हम नारी को चित्रित करेंगे तथा देखेंगे कि क्या नारी अपने अधिकारों के प्रति , अपनी स्थिति के प्रति जागरूक थी ? और उसकी स्थिति कैसी थी ? आदि।
2. **राजनीतिक चेतनाः -** राजनीतिक चेतना को हम अलग से विवेचित नहीं करेंगे क्योंकि यह हमारा विषय नहीं है। हमारा अध्ययन सामाजिक चेतना तक ही सीमित रहेगा।
3. **आर्थिक चेतनाः -** आर्थिक चेतना के अन्तर्गत उस समय के समाज की तथा उसमें रहने वाले लोगों की आर्थिक दशा को चित्रित करेंगे तथा देखेंगे कि उस समाज क लोग किस तरह अपना जीवन व्यतीत कर रहे थे। यहाँ आर्थिक चेतना से अभिप्रायः व्यापक परिपेक्ष्य में ग्रहण नहीं किया गया है। क्योंकि यह हमारे विषय से वैसे अलग रूप में पड़ता है। तत्कालीन समाज में धर्म का क्या स्वरूप था , यह भी विवेचित किया गया है क्योंकि यह समाज की वर्गीय चेतना में विद्यमान तत्व था। अतः इसे पुस्तक के व्यापक अध्ययन के हित में ग्रहण किया गया है। वैसे मुख्यतः सामाजिक चेतना में हमने व्यक्ति (स्त्री - पुरुष) , परिवार , उच्च , मध्य , निम्न वर्ग को तथा उसकी दशा को ही चित्रित किया है।

निष्कर्ष

26 नवंबर 2020 को देश में ही नहीं, बल्कि विश्व भर में संविधान दिवस मनाया गया, जो इस बात का प्रतीक है कि अधिक से अधिक लोगों के भीतर संविधान के लिए सम्मान की भावना आने लगी है। विशेष रूप से दलितों, पिछड़ों तथा महिलाओं के मूलभूत अधिकारों के लिए बाबा साहेब डॉ.अंबेडकर ताउम्र संघर्ष करते रहे, उनका भी समावेश भारतीय संविधान में हुआ है, जो हाशिए से केंद्र में आए लोगों को उनके जीवन की सुरक्षा की गारंटी देता है। 26 नवंबर को संविधान दिवस के बारे में बताने या लिखने का उद्देश्य यही है कि राजनीतिक आजादी के साथ देश के दलितों, पिछड़ों और महिलाओं को सामाजिक, शैक्षिक तथा धार्मिक आजादी भी प्राप्त हुई। सिर्फ अपना मत देने का अधिकार ही नहीं मिला, चुनाव में प्रत्याशी बनने का अधिकार भी मिला। 26 नवंबर 1947 को संविधान का अंतिम मसौदा बाबा साहेब ने रचनाकार के रूप में संविधान समिति के अध्यक्ष डॉ.राजेंद्र प्रसाद को सौंपा था। 26 जनवरी, 1950 को संविधान लागू हुआ। दलितों के लिए यह दिन ऐतिहासिक पर्व के रूप में मनाया जाता है। इसकी उपयोगिता उनके जीवन में सकारात्मक रूप से साबित हुई, क्योंकि यह उनके जीवन के सम्मान से जुड़ा था। पहले उनके जीवन की परिस्थितियां सम्मान रहित थीं। सिर्फ उनके कर्तव्य निश्चित थे, अधिकार नहीं।

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 6, June 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1106333|

जाहिर है 26 जनवरी 1950 का दिन दलितों को अच्छा लगा होगा। उनके जीवन से अंधेरा खत्म हुआ, उजाले ने दस्तक दी। उसी दिन से जीवन के हर क्षेत्र में आगे बढ़ने का उन्हें अवसर मिला। आजादी उनके हिस्से में कम आई या अधिक, यह विमर्श का विषय है। परतंत्रता की बेड़ियों से मुक्ति मिली और स्वतंत्र नागरिक के रूप में उन्होंने बहुत कुछ महसूस किया। हालांकि सामंती मानसिकता से ग्रस्त लोगों को यह गवारा नहीं था। दलित दोहरी गुलामी से मुक्त हो, यह उन्हें रास नहीं आया। वे स्वयं राजनीतिक गुलामी से मुक्त हो गए, लेकिन दलितों को अंतिम कतार में रखना चाहते थे। दलित खुशहाल न हों, वे शिक्षा न लें, अच्छा कपड़ा न पहनें, साथ ही अमानवीय परंपराओं को ओढ़ते-बिछाते रहें, वे ऐसा ही देखते रहना चाहते थे। कहना न होगा कि न केवल हिंदू बल्कि मुस्लिम, सिख और ईसाई धर्म के विशेष लोगों के भीतर इसी तरह के द्वंद्व थे दलितों की आजादी को लेकर। जबकि दलितों में आगे बढ़ने की भावना जोर मार रही थी। वे बाबा साहेब डॉ.अंबेडकर के त्रयी सिद्धांत- 'शिक्षित बनो, संगठित हो और संघर्ष करो' से प्रेरित थे।

इस तरह खास और आम वर्ग के अपने-अपने द्वंद्वों के साथ उन सभी ने पुरानी शताब्दी से नई शताब्दी में प्रवेश किया। अगर यह कहा जाए कि दलितों की उपलब्धियों की शुरुआत नई शताब्दी में हुई तो गलत नहीं होगा। क्योंकि पुरानी शताब्दी में आजादी और संविधान के बावजूद दलितों की जीवन-स्थितियों पर सवर्णों का इतना अधिक दबाव था कि वे ऊपर नहीं उठ पा रहे थे। कहना न होगा कि नई शताब्दी में दलितों के भीतर पूरी तरह से आत्मविश्वास आया, जिसने उन्हें आगे बढ़ने में मदद की।

वर्तमान भारतीय परिवेश में दलित समाज के भीतर निर्माण की प्रक्रिया तेजी से काम कर रही है, इसलिए उनके जीवन और चेतना में सकारात्मक तत्व जुड़ रहे हैं। आजादी से पहले अपने ही देश में वे बेगाने थे। उनका अस्तित्व ही नहीं था। वे बिखरे हुए लोग थे। बाबा साहेब ने उन्हें 'ब्रोकिन पीपुल' कहा है। आज उन्हें अहसास हो रहा है कि उनकी सामाजिक और शैक्षिक स्थिति में सुधार हुआ है। भले ही उसका प्रतिशत संतोषजनक न हो, लेकिन स्थितियां बदली हैं। उन स्थितियों के बदलने के पीछे दलित समाज के महापुरुषों का संघर्ष है। उस संघर्ष में नई पीढ़ी के दलितों ने इजाफा किया है। सुखद बात यह है कि दलितों में संगठन के तत्वों का निर्माण पहले से अधिक हुआ है। दलितों को लगता है, सारा जहां उनका है। उनके संघर्ष क्षेत्रों के साथ कार्य (व्यवसाय) क्षेत्रों का भी विस्तार हुआ है। दलित प्रतिभाओं ने न केवल राष्ट्रीय स्तर पर, बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी पहचान बनाई है। साहित्य, इतिहास और अस्मिता के साथ वे आगे बढ़े हैं।

जहां तक सवाल पहले से भिन्न होने का है, कुछ बातें ऊपर आ गई हैं। इनसे पाठकों को अहसास होगा कि दलितों की मानसिकता में किस तरह की नई पहल हुई है। फिर भी हम बताना चाहते हैं कि जैसे-जैसे दलित शिक्षित हुए और अपने-अपने व्यवसायों के साथ नौकरियों में उन्होंने प्रवेश किया, वैसे-वैसे उनके भीतर से सवर्णों के प्रति कटुता कम हुई है। दलितों तथा गैर-दलितों के बीच संवाद स्थापित हुआ है। अंतरजातीय विवाहों की शुरुआत हुई है। विभिन्न आंदोलनों में परस्पर सहभागिता बढ़ी है। एक-दूसरे के सुख-दुख में वे पहले से अधिक शामिल होने लगे हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि दलितों के भीतर आत्मविश्वास बढ़ा है।

हिंदू धर्म के संस्कारों तथा रूढ़ियों ने उन्हें जड़ बना दिया था। इसलिए डॉ. अंबेडकर ने कहा था, 'असहायता, समर्पण और दासता का जीवन जीनेवाले आदमी को कोई लाभ नहीं होता।' उनके द्वारा 31 जनवरी, 1920 को 'मूकनायक' की शुरुआत करना यही दर्शाता है।

आजाद भारत में सामाजिक परिवर्तन हुआ है। जो परिस्थितियां जटिल थीं, आज सहज हुई हैं। इन परिस्थितियों में बदलाव के लिए स्वयं दलितों की प्रभावपूर्ण भूमिका रही है। वे स्वयं सजग हुए हैं और समाज को सजग करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

जहां तक दलित साहित्य की बात है, दलित साहित्यकारों ने न केवल दलितों को जागृत किया है, बल्कि सवर्णों के एक बहुत बड़े वर्ग को भी, विशेष तौर पर महिलाओं को अमानवीय रूढ़ियों तथा बुरी परंपराओं से अपने-आपको बचाने के लिए ऊर्जा दी है।

कहा जा सकता है कि दलित साहित्य और आंदोलन मध्यकाल से लेकर आधुनिक काल तक और आजादी के बाद से आज तक के धरातल पर विकास के विभिन्न पड़ावों से गुजरा है। इन अनगिनत पड़ावों में उसे नए-नए अनुभव प्राप्त हुए हैं। कभी दलित समाज हाशिए पर जीने को विवश था, आज केंद्रीय धारा में शामिल ही नहीं है, बल्कि उसने अपने वजूद के होने का अहसास कराया है। भारत सरकार तथा विभिन्न राज्य सरकारों की अनगिनत योजनाओं में उसका दखल हुआ है। सच कहा जाए तो दलितों ने न केवल दलित वर्गों को, बल्कि समूची मानव जाति को समता, बराबरी के आधार पर जीने की इच्छा दी है। मानवीय आधार पर नए साहित्यिक तथा सांस्कृतिक मूल्य दिए हैं। आम आदमी से खास आदमी का संवाद स्थापित किया है।

आज वह दलित आकांक्षाओं का भारत बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। संस्कृतीकरण की कई शताब्दियों से गुजरने के बाद नए भारत की रचना उसके सामने है। हालांकि दलितों के सामने अनगिनत चुनौतियां हैं, फिर भी वह अपने अभियान में लगा है। उसका सपना है ऐसे समाज की रचना हो, जहां समता, स्वतंत्रता और बंधुता हो।

संदर्भ

1. नलंदा विशाल शब्द सागर - पृ 0 388 (1954)
2. डॉ . रत्नाकर पाण्डेय - हिन्दी साहित्य सामाजिक चेतना , पृ 0 160
3. हिन्दी विश्व कोष खण्ड 4, पृ 0 282

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 6, June 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1106333|

4. हिन्दी साहित्य कोष 1 सं0 धीरेन्द्र वर्मा, पृ0 316
5. मानक हिन्दी कोष: खण्ड दूसरा: रामचन्द्र वर्मा, पृ0 274
6. रमेश कुन्तल, 'मेघ' (आलोचना) जनवरी - मार्च, 1976
7. अर्चना जैन, प्रेमचंद के निबंध साहित्य, पृ0
8. डॉ. उर्मिला गम्भीर - प्रतापनारायण श्रीवास्तव के उपन्यास, 15-16 का समाज शास्त्रीय अध्ययन, पृ0 38
9. हिन्दी शब्द कोश, पृ0 283
10. हिन्दी विश्व कोष, खण्ड 4, पृ0 सं0 312
11. डॉ. रत्नाकर पाण्डेय - हिन्दी साहित्य सामाजिक चेतना, पृ0 168
12. डॉ. सरसस्वत द्वारा पढ़ा गया प्रपत्र

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor

Impact Factor: 8.118

doi crossref

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

9940 572 462 6381 907 438 ijirset@gmail.com

Scan to save the contact details